# कविता

16

अप्रैल, 2003

सम्पादक : जगन्नाथ

# कविता

(भोजपुरी कविता के पहिल त्रैमासिक)

वर्ष-4 अंक-4 अप्रैल, 2003

सम्पादक : जगन्नाथ

सह सम्पादक : भगवती प्रसाद द्विवेदी

प्रबन्ध : संजय कुमार

चित्रसज्जा : संगीता सिन्हा

सम्पादकीय सम्पर्क : श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001

प्रकाशक : भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान
श्याम भवन, एस॰ पी॰ सिन्हा पथ,
बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001

सहयोग राशि : एह अंक के : 7/-
वार्षिक : 20/-
डाक से : 25/-
आजीवन : 251/-

(सहयोग राशि सम्पादक का नाँव से सम्पादकीय सम्पर्क पर देब)

सम्पादन-संचालन : अवैतनिक-अव्यावसायिक

रचना खातिर एकमात्र रचनाकार जिम्मेदार । भाव, विचार भा कवनो स्तर पर ओह से 'कविता' परिवार के सहमति कतई जरूरी नइखे ।

## बिहोरा

भोजपुरी कविता के उत्कृष्ट, मानक, सांगोपांग समकालीन स्वरूप के प्रस्तुति 'कविता' के मंसा बा आ भरोसा बा सिरजनहार के सर्वोत्तमता के । एकरा अनावरण प्रतिनिधि गीत, ग़ज़ल, कविता आ लोकराग के रचना के बेसाही से इंतजार रही 'कविता' के ।

## सम्पादक के पन्ना

एह अंक के साथ 'कविता' के चउथा साल पूरा हो रहल बा । प्रकाशन का नियमितता के संकल्प का साथे 'कविता' के प्रकाशन शुरू कइल गइल रहे । संकल्प अबहीं तक त नीके निबहल आ आगे भी हर संभव प्रयास इहे रही कि एकर निबाह होत चलो, बाकिर बहुत संकोच का साथ कहे के परता कि 'कविता' का जवना पाठकीय सहयोग के अपेक्षा रहे, नइखे मिलत । कवनो साहित्यिक पत्रिका के आ ऊहो 'कविता' जस निखालिस कविता के पत्रिका के अधिकांश पाठक साहित्यकारे लोग हो सकेला, मगर साहित्यकार लोग में ढेर लोग अइसने बा, जे पत्रिका खरीद के ना पढ़ल चाहे । कतना लोग त पत्र लिख-लिख के अपना गुस्सा के इजहार भी करता कि ओह लोग के पत्रिका मुफ्त में काहें नइखे भेजल जात । सम्प्रति, इहे स्थिति बा, जवना के झेलत भोजपुरी पत्रिकन के प्रकाशन हो रहल बा । शत-प्रतिशत, घर से पइसा लगाके कवनो पत्रिका का प्रकाशन के नियमितता बरकरार राखल कतना दिन तक संभव हो सकेला ? जोस-खरोस में सम्पादक लोग नया-नया पत्रिकन के शुरुआत त कर देता, दू-चार अंक निकालियो लेता, बाकिर सहयोग का अभाव में ओह पत्रिकन का अनियतकालिक होत भा बन्द होत देरी नइखे लागत । स्थिति बदले के चाहीं ताकि भोजपुरी साहित्य के प्रचार-प्रसार बाधित ना होखे पावे । कवनो साहित्य के प्रचार-प्रसार में पत्रिकन के भूमिका का होला, ई कहे के जरूरत नइखे ।

हर कवि आ कविता-प्रेमी बन्धु से अनुरोध बा कि ऊ लोग 'कविता' के सहयोगी सदस्य बने के कृपा करो आ सँपरे त अउर लोग के बनइबो करो । ई सहयोग 'कविता' का राह के बहुत बड़ सम्बल बनी, ओकरा प्रगति-पथ के प्रशस्त करी ।

ई त भइल आर्थिक सहयोग के बात । रचना-सहयोग का स्थिति के भी नीकं ना कहल जा सके । अंक-13 से प्रायोगिक तौर पर, सहयोग-राशि में बिना कवनो वृद्धि के, 'कविता' का मूल स्वरूप के अक्षुण्ण राखत ओकरा पृष्ठ-संख्या में आठ पेज के बढ़ोत्तरी कइल गइल रहे, एह सोच के साथ कि एह आठ पेज में काव्यविषयक आलेख आ पुस्तक-समीक्षा आदि प्रकाशित कइल जाई । बाकिर, एह आठ पेज के मैटर, लाख आरजू-मिन्नत कइला का बादो नसीब नइखे हो पावत । हार-पाछ के एह सिलसिला के फिलहाल स्थगित कइल जा रहल बा । 'कविता' अपना पूर्व स्वरूप में निकलत रही ।



www.bhojpurisahityangan.com

# पाण्डेय कपिल के दूगो गजल

[एक]

का बताई कि दिल जरल का हऽ
का ह अमरित अउर गरल का हऽ

अपना आँतर में झाँक के देखीं
मन के खाली रहल, भरल का हऽ

आँख जेकर कबो ना भर आइल
का कही, लोर के ढरल का हऽ

भोर में हरसिङार बतला दी
एह तरे फूल के झरल का हऽ

खेल मउअत के नइखे जे खेलल
का बताई, जियल-मरल का हऽ

[दू]

मन-भ्रमर फेरु गुनगुनाइल बा
प्रेम-सर में कमल फुलाइल बा

आँख के राह चल के आँतर में
आज चुपके से के समाइल बा

दूब के ओस कह रहल, केहू
रात-भर नेह से नहाइल बा

रस-परस-रूप-गंध-शब्दन के
वन में मन ई रहल लोभाइल बा

जिन्दगी गीत हो गइल बाटे
राग में प्राण तक रँगाइल बा

●

# जगन्नाथ के दूगो गजल

[एक]

उम्र भलहीं गुमान में बाटे
जिन्दगी इम्तहान में बाटे

भर गइल जख्म बा, मगर अबहूँ
दर्द ओकरा निसान में बाटे

आँख में बा बसल शहर, लेकिन
गाँव पइसल परान में बाटे

हम त गीता में उहे पढ़लीं जे
बाइबिल में, कुरान में बाटे

उम्र के भी त कुछ तकाजा बा
अब का उघटा-पुरान में बाटे

सोच लीं, वार तब करीं रउवा
तीर हमरो कमान में बाटे

[दू]

मान-सम्मान से डर लागत बा
हमरा एहसान से डर लागत बा

ठीक से खुद के भी कहाँ जनलीं
जान-पहिचान से डर लागत बा

गाँव जाईं, त जाईं कइसे हम
खेत-खरिहान से डर लागत बा

हाल कुछ एह तरह के बा, यारे
अपने ईमान से डर लागत बा

खुद के इन्सान हम कहीं कइसे
जब कि इन्सान से डर लागत बा

●



www.bhojpurisahityangan.com

# बलभद्र के एगो कविता

## जा रहल बा लोग अबकियो

ऊ लोग गुरुप में बा
साँस में साँस गँथाइल जेनरल बोगी में
चूरा-चबेना के फाँका में
अपना-अपना मन के फरियावत-फँफरावत

कमा-धमा के रहे लोग आइल
फेन जा रहल बा कमाए-धमाए
जा रहल बा घर से तास सम्हार के
तास सम्हारे जोग बनि के फेन आवे खातिर

सटि-सुटि के बइठल जा रहल बा लोग
जा रहल बा बींड़ी धरावत
खइनी ठोकत
नीन के बेसम्हार झोंका
बगलवाला कान्ह पर सम्हरावत बार-बार

एह लोग खातिर नया नइखे ई सफर
ना रेल, ना टीटी, ना पुलिस
ना हल्ला, ना हुज्जत, ना खोमचा-खँचोली
नया नइखे पानी बिना परान घुटुकत नल
बाकी एह लोग के भाव कुछ अइसन
जइसे जात होखे लोग पहिले-पहिल

सभत्तर लुटात-डँटात जा रहल बा लोग
डब्बा के हज-हज में
गाँव-घर के फेंटले आपन बात
जा रहल बा लोग हँसत-ठठात
साल-छव महीना के दूरी के कठिन एहसास में दहात
जा रहल बा लोग एगो झोंक में
एह झोंक में दिल्ली बा झलकत
झलकत बा सूरत

www.bhojpurisahityangan.com

दियरखा प छुटल चुनौटी संगे
जइसे छुटि गइल होखे मन
जा रहल बा लोग अपना के छोड़ले

निसवद रात में
दीया अस बरी अबकियो
गीत बन झरी
ताल ठोकी तसला प
इहे छुटलका

नया-नया बोल ले ले जा रहल बा लोग अबकियो
कतने कुल्हि पलान ले-ले जा रहल बा लोग अबकियो
कतने कुल्हि फरमाइश ले-ले जा रहल बा लोग अबकियो
लौट के आवेवाला दिन धइले जा रहल बा लोग अबकियो

●

# सूर्यदेव पाठक 'पराग' के एगो गजल

कही का, करी का, चली कौन राहे, अजीबे दशा बा भइल आदमी के
पराया के आशा कइल छोड़, खुद पर, उचित बा भरोसा कइल आदमी के

जरल जे बना के स्वयं प्राण-बाती, हवा के थपेड़ा सहल जिन्दगी-भर
हटल बा अन्हारा, भइल बा उजाला, कहीं खून बाटे जरल आदमी के

कबो हार होला, कबो जीत होला, मगर हार माने कबो ना, बढ़े जे
समय साथ देला, विजेता बनेला, अकारथ ना होला चलल आदमी के

लिखेला सभे एगो इतिहास आपन, रचल जिन्दगी भर के होला कहानी
चमकते रहेला युगन ले हमेशा, सुयश ना भइल बा मइल आदमी के

जगह छोट होखे, तबो हो सकेला, गुजारा कइल आपसी दोस्ती से
मगर आदमी आदमी तब बनेला, जबे आसमाँ-अस हो दिल आदमी के

●



www.bhojpurisahityangan.com

# सतीश प्रसाद सिन्हा के दूगो गीत

[एक]

## जंग

आदमी से आदमी के
ठन गइल बा जंग ।

जीत पाई दिल, बँचल बा
अब कहाँ ऊ नेह
देह जीते पर अमादा
हो गइल बा देह
आदमी अब आदमी से
हो गइल बा तंग ।

ना डरेला जानवर से
आदमी तिल भर
आदमी के हो गइल बा
आदमी से डर
प्यार के रंगीन दुनिया
हो गइल बदरंग ।

बिक रहल बाटे हवा आ
फूल के अब गंध
बिकत बाटे आदमी के
मौसमी संबंध
केहू के आपन सफर में
केहू नइखे संग
आदमी के आदमी से
ठन गइल बा जंग ।

[दू]

## मन के पीर

थकल पाँव अब राह कठिन बा
कवले चलत रहीं ?

साथी के अब साथ कहाँ बा
अपनापन के बात कहाँ बा
प्राण अकेला भरल दुपहरी
कवले जरत रहीं ?

अब ना केहू प्यार निभावे
आपन बनिके हाथ धरावे
मन के दिया जरा के आपन
कवले बरत रहीं ?

जिनगी भर हम प्यार लुटवलीं
दुश्मन के भी दोस्त बनवलीं
मन के आपन धीर धरा के
कवले छलत रहीं ?

नेह-छोह के गइल जमाना
दया-धरम बा बात पुराना
मन में आपन पीर दबवले
कवले जियत रहीं ?

●



www.bhojpurisahityangan.com

# हरीन्द्र 'हिमकर' के एगो गीत

## खोंता कहीं लगावऽ

कवनो जुगुत लगाके उड़ि जा
खोंता कहीं लगावऽ
चिरई! खोंता कहीं लगावऽ !

सूखल बाग-बगइचा देखऽ
हवा इहाँ महुराइल
पानी में मछरी मरि गइली
पुरइन-पात झुराइल
सम्भव बा, पानी से जरि जा
डैना के फइलावऽ !

मांस, मीन, मदिरा से मातल
रावण-राज इहाँ बा
अंडा, बच्चा अब ना बाँची
घर-घर बाज इहाँ बा
मानुष हीन लोक पर चढ़ि जा
आपन बंश बढ़ावऽ !

दाना-दाना में बा फाना
माया-जाल रचल बा
मौसम इहाँ शिकारी, पंछी
हाहाकार मचल बा
आपन अंश बचा के टरि जा,
कतहीं चोंच लड़ावऽ !

घर-घर में बारूद भरल बा
दर-दर तोप तनाइल
भरल दुपहरी में ना सूझे
के आपन, के बाइल
सूखल सोत हिया के भरि जा,
चहकऽ आ चहकावऽ !

●

# सुरेश कांटक के एगो कविता

## भूत

आवत भूत
रोवावत भूत
आज जमात बढ़ावत भूत
धुआँ-धुआँ फइलावत भूत
भूत-भभूत उड़ावत भूत
भूत ! भूत ! भूत !

सपना सकल जरावत भूत
गीत अतीत के गावत भूत
धन-मन तन-मन धावत भूत
भावी के अझुरावत भूत
रजनी दिवा बतावत भूत
भूत ! भूत ! भूत !

सुरसा अस मुँह बावत भूत
हाथ-पाँव फइलावत भूत
जन-मन के भरमावत भूत
लोहू नदी बहावत भूत
हँसा-हँसा डेरवावत भूत
भूत ! भूत ! भूत !

मुड़ी काट हँसावत भूत
भाइन के लड़वावत भूत
जागऽ नीन बढ़ावत भूत
दीया जरावतऽ आवत भूत
'कांटक' आगि जरावत भूत
भूत ! भूत ! भूत !

●



www.bhojpurisahityangan.com

# शिवपूजन लाल विद्यार्थी के एगो गीत

## भोर भइल

जागऽ राही, भोर भइल ।
धरती-गगन अँजोर भइल ।

पूरुब के परबत पर धधकल
लाल आगि के गोला
अंबर से धरती पर उतरल
कनक-किरिन के डोला
चिरइन के शहनाई बाजल
अमराई में शोर भइल ।

सूरुज-प्रीतम कली-कली के
घूंघट हौले खोलत
रूप-गंध के लोभी रसिया
भँवरन के मन डोलत
मंद हवा के मादक अँचरा
महमह चारो ओर भइल ।

दिवस धूप के डंडा भाँजत
आ पहुँचल गरमाइल
गठरी आपन ले अन्हार के
डरि के राति पराइल
मिलन-घरी बा, चकवा-चकई
सुख में भाव-विभोर भइल ।

आसमान के बगिया उजरल
फूल झरल तारन के
मुँह मलीन चंदा माली घर
लवटि चलल बेमन के
विरह-पीर रतिया के ढरि-ढरि
घास-पात पर लोर भइल ।

फूल-फूल सतरंगी तितली
के लहँगा लहराइल
गागर ले जमुना तट राधा
गोपिन के सँग आइल
नयन बेआकुल खोजत थाकल
केने माखन-चोर गइल ?

●

# जौहर शफियाबादी के एगो गजल

धर्म-मजहब प आ गइल रोटी
नाच गजबे नचा गइल रोटी

मान-सम्मान, मोल-मरजादा
भाव सबके घटा गइल रोटी

भूख का घाम में मजूरन के
चान जइसन बुझा गइल रोटी

बात इन्साफ के होइत, बाकिर
बीच में बाटे आ गइल रोटी

आदमी का चबाई रोटी के
आदमीयत चबा गइल रोटी

संस्कारी के भूख में 'जौहर'
आके आगे लजा गइल रोटी

●



www.bhojpurisahityangan.com

# विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव के एगो कविता

## जिन्दगी

पुरइन के पात होइत जिन्दगी
सुख के सौगात होइत जिन्दगी

नेहिया के डोर में बन्हाइल
रूप के अँजोरिया नहाइल
सपना के रंग में रंगाइल
अपने सुगन्ध में सनाइल
फूलन के हार होइत जिन्दगी
अजगुत सिंगार होइत जिन्दगी

बाकिर, छल-छद्म में भुलाइल
भोग का सवाद पर लोभाइल
नेति आ अनेति के तफरका
खत्म करे में बा अझुराइल
अपने सवारथ पर बउराइल
मुट्टी भर काँट भइल जिन्दगी
अब बंदर-बाँट भइल जिन्दगी

रस के फुहार होइत जिन्दगी
बरखा-बहार होइत जिन्दगी
अइसन बेआर बहे लागल बा
सपना के महल ढहे लागल बा
सोचल का गइल, हो गइल का ?
काटल जे गइल, ऊ बोवाइल का
हियरा पुकार कहे लागल बा
साजल-सँवारल तार-तार भइल जिन्दगी
बाघ के अँकवार भइल जिन्दगी

कोइल के कूक होइत जिन्दगी
पपिहा के हूक होइत जिन्दगी
प्यार के गुंजार होइत सगरे
मीठ भूल-चूक होइत जिन्दगी

अपनापन सपना बा
प्रेम खाली कल्पना बा
हम उठीं, ऊ गिरो
नितदिन के जपना बा
लोर से सराबोर मुखड़ा के
दर्द के पुकार भइल जिन्दगी
बउध के गुहार भइल जिन्दगी

साँस-साँस जहर भइल जिन्दगी
झंडा पर फहर गइल जिन्दगी
घर में पहुँचे ला दउरत-दउरत
दुअरे पर ठहर गइल जिन्दगी
कइसन रचना रचले विधना
उल्टा-पुल्टा सब विधान भइल
अँसुअन के धार भइल जिन्दगी
दुख के पथार भइल जिन्दगी

माखन के के कहो, रोटी ना
पीताम्बर के कहो, लँगोटी ना
वंशी, बाजी कहाँ, कदमवे ना
गइये जब नइखे, त सोंटी का
जमुना में जहर भराई अतना
कलिया अपने से उतरा जाई
दह में अब कूदे के ना पड़ी
तटवे पर अपने नथा जाई
सतरंग सारी के जिन्दगी
मह-मह किआरी के जिन्दगी
प्रीत, रीत बाँसुरी के जिन्दगी
माई, मीत, भाई के जिन्दगी
सगरे छलावा भइल जिन्दगी
मौत के बुलावा भइल जिन्दगी



www.bhojpurisahityangan.com

# अरुण शीतांश के एगो कविता

## आइहो दादा

दादा परान निकाल के मर गइलन
आह नइखे जात
वाह केहू नइखे कहत

कबो विपत परला प
घर में भा बहरी
कतहीं ठेस लगला प
अचके में आ जाला जवान प
आइहो दादा!
आइहो दादा!!

दादी मर गइली
लेकिन दादी के मरला प
दऽदे इयाद आवताड़न

एह जमाना में
जब दादा-दादी दूनो नइखन
तबो दादा
कबो दादा
दादी कवहुओं ना
ई त साफे अन्याय बा
अगर दादा दबल रह गइलन
त आइहो बाप
लेकिन माई आउर दादी
केहू नइखे बोलत
का इहे एकइसवीं सदी हऽ ?

# अनीश श्रीवास्तव के एगो कविता

## दुख का बारे में

अगर बचा सकल जाव
त बचावल जाव आपन दुख
कि कहि सकल जाव केहू से
आ बाँचल रहे
कुछ कहे खातिर ।

एगो टीस-पीड़ा
एगो दुख
जहिया ना रही एह दुनिया में
सून हो जाई दुनिया
एकदम, वीरान
कि कुछ ना बाँची
कुछ कहे खातिर ।

आपुस में
लेन-देन कइल जाव
दुख के
बाँटल-बँटवावल जाव दुख
जे से
अन्तिम समय
सकून मिल सको मन के
कि, एगो हमहीं दुखी ना रहनीं ।



www.bhojpurisahityangan.com

# लक्ष्मीकांत सिन्हा के एगो कविता

## उगल रही कनेर

उनका बगइचा में लागल बा तरह-तरह के गुलाब
करिया, उज्जर, लाल आ चितकबरा
कुछ विदेशी बा, कुछ देशी
अपना पंखुड़ियन के खोलके खड़ा बा गुलाब
कवनो बड़ बा, कवनो छोट, कवनो ओकरो से छोट
खाद-पानी, तरह-तरह के सेवा खोजता गुलाब
अपना सुगंधि खातिर पास बोलावता गुलाब
ओकरा के तूरल मना बा, काहेंकि
स्वामी के सेवा खातिर सजल बा गुलाब ।
हमरा चउतरा पर अपने आप उगल बा कनेर
एकर डंठल कमजोर बा, बाकिर तोड़ला पर तुरंते उग आवेला कनेर
ओकरा फूल में काँट ना होखे
ओकर रंगो एक होला, पीयर-पीयर
ओकर खुशबू दूर-दूर ले जाला
रूपा के माई रोज ओकरा के खाले
दूनो नाँद का बीचे बान्हल चरन पर खड़ा बा कनेर
छाया ना रहलो पर छाया देला कनेर
चिलचिलात गर्मी में लमहर, छोट आ पातर पतई के बीच बैठल
छाया से बैलन के राहत देला कनेर
देह में खुजली होखला पर ओकरा पर आपन पीठ रगरेलेसऽ बैल
ऊ हिलेला, बाकिर टूटे ना
टूट-टूट के फेरु उग आवेला कनेर
बिना खाद-पानी आ बिना प्यार-दुलार के पलेला, बढ़ेला कनेर
ओकरा तिकोन बीया के घुंघची खेलेली स महल्ला के नंग-धड़ंग लड़िकी
बाबा के देखल, बाबूजी के देखल आ हमार देखल बा कनेर
अब हमार लरिको एकरा के देखी
काहेंकि टूट-टूट के भी उग आवेला कनेर
एकर फूल कवनो महान आदमी के गर्दन में ना लटके
एही से हमेशा उगल रही कनेर
ई कबो ना सूखी, आ एही तरी खिलल रही,
काहेंकि ई गुलाब ना ह, ई ह कनेर ।

●



www.bhojpurisahityangan.com

## अंक के खास कवि : अक्षय कुमार पाण्डेय

# समकालीन कविता के उद्धरणीय धारदार कवि

भगवती प्रसाद द्विवेदी

कविता रचेवाली भोजपुरी के नवकी पीढ़ी में अँगुरी पर गिनाए लायक कुछ नाँव अइसनो बा, जे समकालीन भोजपुरी कविता के कथ्य, शिल्प आ संवेदना के दिसाईं सही समझदारी आ दृष्टिसम्पन्नता का संगे सार्थक दिसा आ ऊँचाई दे रहल बा । अइसने रचनिहारन में एगो महत्वपूर्ण नाँव बा– अक्षय कुमार पाण्डेय । एह युवाकवि में भरपूर संभावना बा, दम-खम बा आ बा समकाल के जाँचे-परखेवाली तल्ख-तेवरगर काव्य-दृष्टि । छन्द के समझ इन्हिकर अतिरिक्त खासियत बा, जवना से ई साबित हो जात बा कि अतुकान्त कविता ऊहे कवि बेहतर ढंग से रचि सकेला, जेकरा पासे छन्द, लय के माकूल जानकारी आ समझदारी होखे । अइसने समकालीन कवियन के बदौलत भोजपुरी कविता कवनो भाषा के काव्य से जमि के टक्कर ले सकेले । इहाँ बानगी के तौर पर अक्षय के छव गो कविता/नवगीत प्रस्तुत कइल जा रहल बा ।

आज भूमण्डलीकरण आ आर्थिक उदारता के नाँव पर बाजारवाद के पइसार घर-घर में हो चुकल बा आ विकल्पहीनता, अनास्था के एह बेरहम दौर में आस-आसरा के कवनो किरिन नजर नइखे आवत । सपना एक-एक क के दम तूरत जात बाड़न स आ 'अरथ' के बेगर सभ कुछ बेरथ बुझात बा । भौतिकता आ बाजारू चकाचौंध में जीएवाला एकइसवीं सदी के मतलबी मनई के लोक, साहित्य आ संस्कृति के चरचा बेमानी लागत बा । हत्या, बलात्कार, हथियार, मीडिया के जगहा भला सिरिजन के का काम! एह दिसाईं कवि के एगो जरूरी कविता 'एह बाजार होत दुनिया में' गौरतलब बा । कतना सहजता आ सादगी से कवि कहत बा– **'सलोनी! चल, हमनी कऽ छोड़ दिहल जाव / अपना हिस्सा कऽ फालतू काम / जइसे तू छोड़ दे / सूरज के दिया देखावल / चान से बतियावल...../ हवा-हरियरी / जीयत नदी / पूरा धरती/ पूरा वसंत भइल / जइसे हम छोड़ देईं...../ शब्दन में जियल / कविता लिखल साँझ-सबेर / धूप-छाँह / खेत-खरिहान / समुन्दर भइल / पुतरी में आकाश बोवल / कबूतर कऽ मुअला पर रोवल ..... '** (कविता:6)

पाँचवी कविता **'आज कऽ समीकरण'** एह कठकरेजी निठुर समय के भयावहता का ओर अँगुरी उठावेवाली एगो धारदार रचना बिया, जवना में डूबत सूरज आ ठूँठ गाँछ के नीचे मूवल उज्जर कबूतर के खोंखड़ आँखि में से निकलत चिउँटी के मुँह के अंडा के जरिए आज के समीकरण समुझावे आ जिनिगी के गणित के हल करे के सीख दिहल गइल बा । जानल



www.bhojpurisahityangan.com

पहिचानल बिम्बन आ प्रतीकन के मार्फत इहाँ कवि गहिर चोट करत बा आ आवेवाला दिनन से आगाह करत बा कि 'सतह से ऊपर उठऽ वरना तोहरा पाँव तले धरती सरक जाई !'

चउथकी कविता **'एगो युद्ध : एगो यात्रा'** में कवि शान्ति खातिर एगो लड़ाई, एगो यात्रा करे के आवाहन करत बा, जवना का बाद फेरु कबो सुन्नर सपनन के धरती पर बनूक ना उगी आ इहे आखिरी अकाल होई । आस-बिसवास से भरल-पूरल एह कविता में जिनिगी में फेरु से जीवंतता आ बेहतरी लवटे के कामना कइल गइल बा । कवि के कहनाम बा– **'अब हमनी कऽ वापिस चले के / एगो हरियर प्रदेश में / जहाँ जिन्दा मिली / किलकारी बचवन कऽ / जहाँ तैरत मिलिहन सऽ / कबूतर आसमान में / जहाँ हाथ में कुआर / चेहरा पर चइत नजर आई ....'** इहवाँ **'हाथ में कुआर'** आ **'चेहरा पर चइत'** के अन्न-धन से लबालब भरल प्रतीक अभिभूत करेवाला बाड़न स ।

एह धरती के गोलाई के भलहीं वैज्ञानिक कारन होखे, बाकिर कवि एकरा गोलाई का माध्यम से आज के हैवानियत, हिंसा, धार्मिक उन्माद आ वहशीपन के ना खाली प्रतिकार करत बा, बलुक फेरु से जीवंतता, परदुखकातरता, भाई-चारा, सौहार्द, साँच, ईमानदारी आ संवेदना के हिमायती करत बा । 'पृथ्वी ए से गोल बिया' के नीर-क्षीर विवेकवाली सकारात्मक पंक्तियन के बखूबी देखल जा सकेला– **'पृथ्वी एह से गोल बिया / कि अधिक से अधिक लोग खड़ा हो सके / कविता के कविता / कहानी के कहानी कहेवाला / खून के खून / पानी के पानी कहेवाला !'** (तिसरकी कविता)

चार गो कविता का साथे-साथ कवि के दूगो नवगीतो दिहल गइल बा, जवना में वक्त के कमीनापन से आगाह करत बेरहम होके धारा के मोड़े के नसीहत दिहल गइल बा । एक ओर व्यंग के तेवर आ तल्खी, उहँवें समय के नजाकत समुझत आवेवाला बाउर दिनन खातिर कमर कसे के आवाहन । सपनन में जियल छोड़ि के यथार्थ के खुरदुरी जमीन से नाता जोड़े के आ फाटल जिनिगी सीए के सलाह । 'धार तेज रखिहऽ' के आखिरी पंक्ति रोमांच से भरे वाली बाड़ी स– **'एक बेर में तीतर पकड़े के होई / भीतर-बाहर कऽ डर पकड़े के होई / वक्त कमीना बा ई / अउरी बाउर आई / धार तेज रखिहऽ तू अपना तलवार कऽ !'** (दूसरका नवगीत)

पहिलको नवगीत 'सुनऽ जा' एगो सार्थक रचना बा, जवन अपना सहजता में गहिर संवेदना छिपवले बा । एगो बंद देखीं– **'टूटल चश्मा, ताश क गड्डी / बिगरल घड़ी, भुलाइल चड्ढी / बहुते बा लउँजार / हटाके कगरी वेद-कुरान / बहारऽ जा घर आ दालान / कि मौसम बजबजात बा / हवा भींजल बुझात बा !'**

कवि अक्षय के कविता बहुत 'लाउड' आ उद्धरणीय बाड़ी स आ मन के आँतर में देरी ले बाजत रहे के ताकत राखत बाड़ी स । इन्हनीं के अरथ परत-दर-परत खुलत बा आ जानल-चीन्हल बिम्बन-प्रतीकन के जरिए ई दम-खम का संगे अपना उपस्थिति के अहसास करावत बाड़ी स । भाषाई कसाव, पनिगर प्रवाह आ गहिर-गझिन संवेदना का संगे अमानवीय होत समाज के मानवीय बनावे के सर्जनात्मक आ सकारात्मक पहलकदमी इन्हनीं के अतिरिक्त खासियत बा । समकालीन भावबोध से लैस लीक से अलगा हटि के जियतार ढंग से रचाइल एह कवितन के चमक-गमक से पढ़निहारन के 'गूँग के गुर' अस आस्वाद मिली, एकर भरपूर भरोसा बा ।

कविता/अप्रैल, 2003/12

www.bhojpurisahityangan.com

# अक्षय कुमार पाण्डेय के छव गो नवगीत/कविता

## नवगीत

[एक]

सुनऽजा.....

आज हवे अतवार
सुनऽजा लछिमन आ लुकमान
गढ़ऽजा मिलके रोशनदान
कि दिन में भइल रात बा
हवा भींजल बुझात बा !

पिछुवारे मीना-बजार बा
चान चवन्नी-अस बेकार बा
सूरज बा बेमार
न होखे ठंढा अब ईमान
न होखे तितर-बितर सामान
लगवले चोर घात बा !

टूटल चश्मा, ताश क गड्डी
बिगरल घड़ी, भुलाइल चढ्ढी...
बहुते बा लउँजार
हटाके कगरी वेद-कुरान
बहारऽजा घर आ दालान
कि मौसम बजबजात बा !

साफ रखऽजा परदा-पानी
दर-दीवार रहे असमानी
सफल रही उपचार
धो लऽ जा मन अब लहूलुहान
बदल दऽ जा अब गलत विधान
हाथ से समय जात बा !

[दू]

धार तेज रखिहऽ

आपन बाजू लेके
सधल तराजू लेके
जोखऽ तू ईंट-ईंट दिल्ली-दरबार कऽ
काहें बइठल बाड़ऽ साथी बेकार कऽ !

होके बेरहम आज धारा के मोड़ऽ
ताल-नदी-नारा से नाता मत जोड़ऽ
सपना में मत जीयऽ
फाटल जिनिगी सीयऽ
हवा में उड़ा दऽ अब फूल हरसिंगार कऽ !

छाती पर भूत-अस सवाल खड़ा बाटे
पानी पियरा गइल अकाल खड़ा बाटे
पाई-आना जानऽ
जोड़-घटाना जानऽ
पेट पर करऽ अनुभव कीमत बाजार कऽ

एक बेर में तीतर पकड़े के होई
भीतर-बाहर कऽ डर पकड़े के होई
वक्त कमीना बा ई
अउरी बाउर आई
धार तेज रखिहऽ तू अपना तलवार कऽ !



www.bhojpurisahityangan.com

[तीन]

## पृथ्वी ए से गोल बिया

पृथ्वी एह से गोल नइखे
कि अधिक से अधिक
रखल जा सके लाश
अधिक से अधिक
उगावल जा सके बनूक
अधिक से अधिक
बनावल जा सके मंदिर-मसजिद
अधिक से अधिक लोग
पढ़ सके नमाज, उतार सके आरती
एक साथ

पृथ्वी एह से गोल बिया
कि अधिक से अधिक लोग
खड़ा हो सके
प्रेम करेवाला
कबूतर उड़ावेवाला
दिया जरावेवाला
सजे-सजावेवाला
नाचे-गावेवाला
हाथ मिलावेवाला

पृथ्वी एह से गोल बिया
कि अधिक से अधिक
लोग खड़ा हो सके
कविता के कविता
कहानी के कहानी कहेवाला
खून के खून
पानी के पानी कहेवाला ।

www.bhojpurisahityangan.com

[चार]

## एगो युद्ध : एगो यात्रा

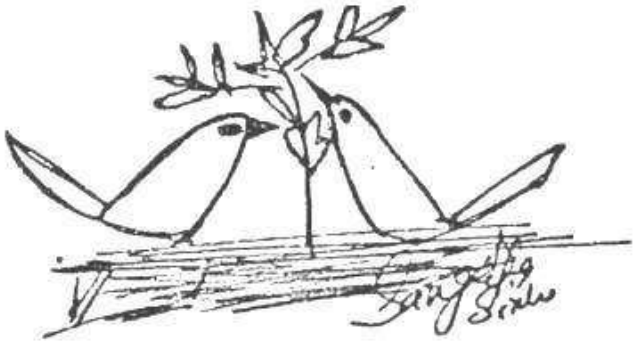

ई अंतिम अकाल हऽ
अब हमनी कऽ वापिस चले के
एगो हरियर प्रदेश में
जहाँ जिन्दा मिली
किलकारी बचवन कऽ
जहाँ तैरत मिलिहन सऽ
कबूतर आसमान में
जहाँ हाथ में कुआर
चेहरा पर चइत नजर आई
जहाँ खूबसूरत सपनन कऽ जमीन पर
बनूक ना उगी
जहाँ मउवत.....

चलऽ फेर सुरू कइल जाव
एगो युद्ध
एगो यात्रा
शान्ति बदे
बुद्ध कऽ कसम खाके ।

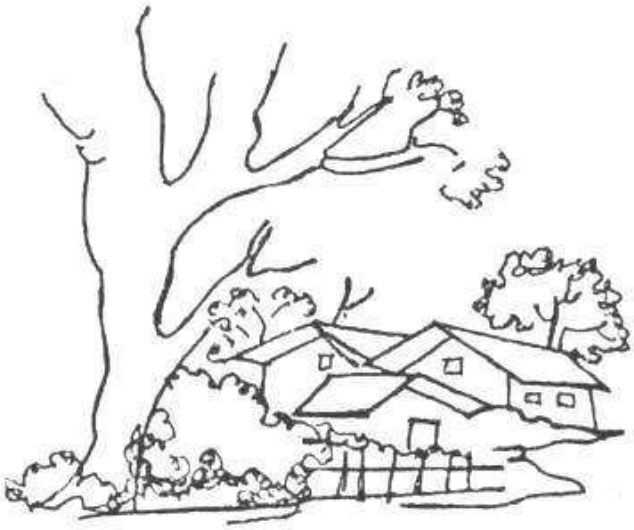

[पाँच]

## आज कऽ समीकरण

उड़े सीख लऽ साथी
ना जाने कब
तोहरा पाँव तले धरती सरक जाई,
सतह से ऊपर उठऽ
देखऽ
डूबत सूरज
ठूँठ पेड़ क नीचे
मुअल उज्जर कबूतर
कबूतर कऽ खोखल आँख
आँख से निकलत चिउँटी
हर चिउँटी कऽ मुँह में एगो अण्डा
ई हऽ
आज कऽ समीकरण
जवना पर हल होता
जिनिगी कऽ गणित ।



www.bhojpurisahityangan.com

[छव]

## एह बाजार होत दुनिया में

सलोनी,
चल हमनी कऽ छोड़ दिहल जाव
अपना हिस्सा कऽ फालतू काम
जइसे तू छोड़ दे-
सूरज के दिया देखावल
चान से बतियावल
सजल-सँवरल
ऐना में मुस्किआइल
हवा-हरियरी
जीयत नदी
पूरा धरती
पूरा बसंत भइल.....
जइसे हम छोड़ देईं
फगुआ, चइता, कजरी गावल
हँसल-हँसावल
बँसुरी बजावल
शब्दन में जियल
कविता लिखल
साँझ-सवेर
धूप-छाँह
खेत-खरिहान
समुन्दर भइल
पुतरी में आकाश बोवल
कबूतर कऽ मुअला पर रोवल.....

इं कुल्हि ना दं पाइं
एह बाजार होत दुनिया में
दुकान-शहर
सड़क-पुल
कार-बस
लोहा-पाथर
लकड़ी-गोंइठा
दवा-दारू
रोटी-पानी
सिउँठा-बेलना
तसला-कठौती
चूल्हा-चाकी
सींढ़ी-छत
दीवार-दरवाजा
देहरी-चउकठ
घर-आँगन-दालान.....
ना दे पाई
रंगीन चश्मा
प्लास्टिक क गुड्डा
काठ कऽ घोड़ा
कागज कऽ गौरइया
कठघरा
बन्दूक क गोली
धारदार हथियार
रोज हत्या
ताजा अखबार
ना दे पाई !

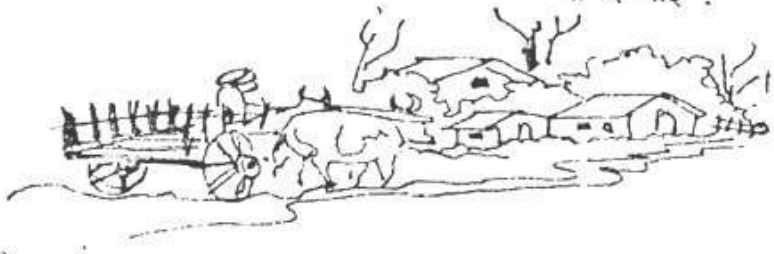



www.bhojpurisahityangan.com

## सहयोगी रचनाकार

- **अक्षय कुमार पाण्डेय/13**
  रेवतीपुर (रंजीत पाण्डेय), गाजीपुर-232327
- **अनीश श्रीवास्तव/9**
  बड़ी बाजार, बाँसडीह, बलिया (उत्तर प्रदेश)
- **अरुण शीतांश/9**
  मणि भवन, संकटमोचन नगर, आरा-802301
- **जगन्नाथ/2**
  श्याम भवन (ललिता होटल के पीछे)
  बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001
- **डॉ. (मौलाना) जौहर शफियाबादी/7**
  खानकाह-आलिया-एमामिया, शफियाबाद शरीफ
  जिला-गोपालगंज 841416
- **पाण्डेय कपिल/2**
  मार्ग-3, इन्द्रपुरी, पटना-800024
- **बलभद्र/3**
  ग्राम-योगीवीर, पोस्ट-कमरियाँव, जिला-भोजपुर 802183
- **भगवती प्रसाद द्विवेदी/11**
  पो. बॉ. 115, पटना-800001
- **डॉ. भालचन्द्र सिन्हा/10**
  प्रोफेसर कॉलोनी, आरा-802301
- **विन्ध्याचल प्रसाद श्रीवास्तव/8**
  पोस्ट-सुगौली, जिला-पूर्वी चंपारन 845456
- **शिवपूजन लाल विद्यार्थी/7**
  प्रकाशपुरी, आरा-802301
- **सतीश प्रसाद सिन्हा/5**
  कल्याण निवास, अम्बेडकर पथ, बेलीरोड, पटना-800014
- **सुरेश कांटक/6**
  कोट, ब्रह्मपुर, जिला-बक्सर-802112
- **सुरेश कांटक 'सरल'/4**
  अध्यापक, उच्च विद्यालय मझौरा, जिला-सारण 841419
- **डॉ. [illegible]/6**
  प्रोफेसर कॉलोनी, [illegible], जिला-[illegible] 845305

[illegible] के लिए [illegible] । [illegible] के शुल्क 5/- [illegible] ।

www.bhojpurisahityangan.com

## 'कविता' - प्रतिनिधि

बक्सर : रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' (शंकर भवन, सिविल लाइन्स)

आरा : जितेन्द्र कुमार (मदनजी का हाता, पकड़ी चौक)

सीवान : डॉ॰ तैयब हुसैन 'पीड़ित' (जेड. ए. इस्लामिया कॉलेज)

## भोजपुरी के महत्त्वपूर्ण पुस्तक

| | |
|---|---|
| सुरबेली (गीत-संग्रह)/रामेश्वर प्रसाद सिन्हा 'पीयूष' | मूल्य 15/- रुपया |
| रेत के परछाँहीं (गजल-संग्रह)/ 'पीयूष' | मूल्य 21/- रुपया |
| चाती (लघुकथा-संग्रह)/भगवती प्रसाद द्विवेदी | मूल्य 30/- रुपया |
| साँच के आँच (लघु उपन्यास)/भगवती प्रसाद द्विवेदी | मूल्य 20/- रुपया |
| गजल के शिल्प-विधान/जगन्नाथ | मूल्य 51/- रुपया |
| भोजपुरी गजल के विकास-यात्रा/जगन्नाथ | मूल्य 50/- रुपया |
| हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी के समरूप छन्द/जगन्नाथ | मूल्य 50/- रुपया |
| पाँख सतरंगी (गीत-संग्रह)/जगन्नाथ | मूल्य 25/- रुपया |
| डर बोलिन के (गजल-संग्रह)/जगन्नाथ | मूल्य 14/- रुपया |

भोजपुरी के अन्य पुस्तक खातिर भी सम्पर्क करीं।

## भोजपुरी साहित्य प्रतिष्ठान

श्याम भवन, एस. पी. सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-800001

उत्तम तथा कलात्मक कम्पोजिंग के एकमात्र केन्द्र

## अनुकृति

एस. पी. सिन्हा पथ, बोरिंग कैनाल रोड, पटना-1